हिंदी एक फलती फूलती भाषा है...

डॉ0 अनिल उपाध्याय

आज समूचे देश में हिंदी दिवस मनाया जा रहा है। हिंदी दिवस आजकल एक पखवाड़े तक चलने वाला सरकारी आयोजन बनकर रह गया है। वे लोग जो वर्षभर अंग्रेजी बोलते हैं , जो हिंदी बोलने में अपनी तौहीन समझते हैं और जिनके खुद के बच्चे कॉन्वेंट स्कूलों में पढ़ते हैं वहीं लोग एक पखवाड़े तक हिंदी पर भाषण देते नज़र आ ?ंगे। वैसे मुझे हिंदी दिवस का नाम सुनते ही पता नहीं क्यों हरिशंकर परसाई की एक बात याद आती है,"दिवस कमजोर का मनाया जाता है जैसे महिला दिवस, अध्यापक दिवस, मजदूर दिवस। कभी थानेदार दिवस नहीं मनाया जाता।" हिंदी जो न सिर्फ़ हमारी राजभाषा है बल्कि जो वैश्विक भाषा बनने की क्षमता रखती है उसे न प्रमोट किए जाने की आवश्यकता है और न ऐसे कोरे व औपचारिक सरकारी आयोजनों की।

भारत एक बहुभाषी देश है और यहाँ अलग - अलग राज्यों में अलग अलग भाषा और बोलियाँ बोली जाती हैं। एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 463 भाषा एवं बोलियाँ बोली जाती हैं जिनमें से 14 भाषाएँ विलुप्त हो चुकी हैं। वाशिंगटन विश्वविद्यालय के प्रो0 सिडनी कुलबर्ट के अनुसार आज विश्व में चीनी तथा अंग्रेजी भाषा के बाद तीसरे नंबर पर हिंदी बोली जाती है। विश्व में लगभग सत्तर करोड़ लोग हिंदी भाषा बोलते हैं। भारत के हर प्रांत में हिंदी बोली व समझी जाती है और देश की लगभग 77 प्रतिशत आबादी हिंदी बोलती या समझती है। हिंदी विश्व की उन सात भाषाओं में से एक है जिनका प्रयोग 2द्ध्ड्ड ड्डस्रस्त्र के लिए किया जाता है। आज संयुक्त राज्य अमेरिका के 45 विश्वविद्यालय सहित विश्व के 140 देशों में 500 विश्वविद्यालयों या संस्थानों में हिंदी पढ़ाई व सिखाई जा रही है। अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने इसे 21वीं सदी की भाषा बताया । ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर ने भारतीय मूल के लोगों को दीपावली की शुभकामनाएँ हिंदी में देकर इसकी महत्ता को स्वीकारा।

आज विश्व में इंटरनेट पर फेसबुक ,ट्विटर व व्हाटसेप सहित अन्य सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। हिंदी को लोकप्रिय बनाने में समाचार पत्रों , रेडियो , दूरदर्शन , फिल्म इंडस्ट्री का विशेष योगदान रहा है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1977 में संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर राष्ट्रभाषा का परचम फहराया था।

अगर हम वैश्विक स्तर पर बात करें तो विश्व में लगभग 7000 भाषा व बोलियाँ बोली जाती हैं । इनमें से कुछ भाषाएँ तो विलुप्त हो चुकी हैं और कुछ विलुप्त होने के कगार पर हैं। एक सुप्रसिद्ध अमेरिकी भाषा विज्ञानी के अनुसार यदि हमने भाषाओं के प्रति संवेदनशीलता नहीं दिखाई तो इस सदी के अंत तक विश्व की लगभग 90 प्रतिशत भाषाएँ समाप्त हो चुकी होंगी या फिर विलुप्त होने के कगार पर होंगी ।

प्रश्न यह है कि भाषा कौन सी मरती है ? भाषा वह मरती है जिसकी अपनी कोई लिपि नहीं होती, अपना साहित्य नहीं होता अथवा जिसके native speakers की संख्या तेजी से घट रही होती है। जब कोई एक भाषा मरती है तो केवल एक भाषा ही नहीं मरती उस भाषा का समूचा साहित्य मरता है, एक संस्कृति मरती है।

कुछ लोगों में यह भ्रम है कि अंग्रेजी के कारण भाषाएँ दम तोड़ रही हैं। सुप्रसिद्ध अमेरिकी भाषाविद डेविड क्रिस्टल ने 'Development Forum' नाम की पत्रिका में 'Language Death' नाम से लिखे एक आर्टीकल में कहा था कि विश्व में जो भी भाषा मर रही है उसका कारण अंग्रेजी नहीं। भाषा के मरने के अपने अलग- अलग कारण होते हैं कोई अन्य भाषा नहीं।

जो लोग यह सोचते हैं कि अंग्रेजी के कारण 1500 वर्ष पुरानी हिंदी भाषा को कोई खतरा है या फिर हिंदी दम तोड़ देगी वे 'फूल्स पेराडाइज' में रह रहे हैं। जिस भाषा के नेटिव स्पीकर्स की संख्या 70 करोड़ से अधिक है, जिस भाषा में 'राम चरित मानस', 'साकेत', 'कामायनी' जैसी कालजयी कृतियाँ लिखी गई हों जिसे लोग इक्कीसवीं सदी की भाषा कह व मान रहे हैं उस भाषा के अस्तित्व को कहीं कोई खतरा नहीं। वस्तुस्थिति यह है कि आज हिंदी के बढ़ते वर्चस्व के कारण कई भाषाओं पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। जब कोलंबिया में बोली जाने वाली भाषा Totoro केवल चार नेटिव स्पीकर्स , Lipan Apache भाषा दो व नाइजीरिया में बोली जाने वाली भाषा Bikya एक नेटिव स्पीकर के दम पर आज भी जीवित हैं तो फिर 70 करोड़ से अधिक नेटिव स्पीकर्स की भाषा हिंदी को कहाँ व कैसा खतरा ? हिंदी को अगर कोई खतरा है तो वह हिंदी के नेटिव स्पीकर्स है। उन हिंदी भाषियों से है जो अशुद्ध हिंदी बोलते व लिखते हैं। जिस प्रकार बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है ऐसे ही आज बहुत से अशुद्ध शब्दों ने शुद्ध शब्दों को चलन से बाहर कर दिया है।

स्थिति यहाँ तक आ पहुँची है कि आज हम अशुद्ध शब्दों को ही शुद्ध समझने लगे हैं। कुछ शब्दों की दो या उससे अधिक वर्तनी प्रचलन में हैं। हिंदी को इस भाषाई प्रदूषण से बचाने की आवश्यकता है। इस दिशा में जब तक कुछ ठोस कदम नहीं उठाए जाते तब तक ऐसे दिवस मनाए जाने की न कोई सार्थकता है न ही कोई औचित्य ।

किसी भाषा से नफरत नहीं की जा सकती

मेहजबीं

मेरी अम्मी बिहार दरभंगा से थीं। और अब्बा यूपी सहारनपुर से। दोनों की ज़बान बिल्कुल अलग थी। उन दोनों को बातें करते हुए कोई दिक्कत नहीं होती थी। वो दोनों बाख़ूबी एकदूसरे की बात समझ जाते थे।

हम दोनों बहन भाई के लिए ये हैरत की बात नहीं थी।क्योंकि हम बचपन से उनके संवाद दो अलग ज़बान में सुनते हुए ही बड़े हुए हैं।

हम अपनी अम्मी और अब्बा दोनों की भाषा अच्छी तरह समझते हैं। अब्बा की भाषा थोड़ा बहुत बोल भी लेते थे पहले। अम्मी की भाषा बोल नहीं सकते ठीक तरह से।

अम्मी जब दुनिया से रुख़सत हुई तो उनकी ज़बान भी मुझसे दूर चली गई। जब ख़ाला आती या उनके गाँव का कोई तो उनकी भाषा के शब्द कानों में जैसे जैसे पड़ते अम्मी का चेहरा आँखों के सामने घूमता रहता।

मेरी हमेशा यही ख़्वाहिश रहती है कि अम्मी और अब्बा की ज़बान बोलने वाले लोग मेरे इर्द-गिर्द रहें। कभी कोई अम्मी या अब्बा के यहाँ का कोई मिलता है। उसकी ज़बान से अम्मी या अब्बा की भाषा के शब्दों को सुनती हूँ तो। महसूस होता है इनमें से बहुत से शब्द तो ज़हन में याद नहीं थे। सुने तो फिर से याद आ गये।

मसलन अम्मी किसी चीज़ या इंसान के खो जाने को कहती थीं।

"हैरा गैलई"

"भुतला गैलई"

कोई बात समझाती तो बोलती थी।

"समझलूहु की न समझलूहु"

मैं जब हरयाणा से बीएड कर रही थी। परीक्षा के दौरान वहीं रही। गाँव की अपनी क्लासमेट के साथ एग्ज़ाम सेंटर पर इम्तिहान देने जाती। रस्ते भर हम गाड़ी में रीविजन करती हुई जाती थीं। मैं ख़ामोश हो जाती तो वो मुझे ख़ामोश नहीं रहने देती। अकेले खिड़की से बाहर झांकती हुई जाती तो मुझे अपनी ओर मुतवज्जेह करतीं।

"ए मेहजबीं तू बोल को ना री...यूं चुपचाप न रैया कर हँसती हुई चौख्खी लागे।"

"तू त माहरी मेहमान से उदास ना रैन दें क़तई"

अजनबी जगह पर अजनबी लोगों से अपनापन मुहब्बत मिलना किसी छोटे गाँव में ही मुमकिन है।

धीरे धीरे तो महानगरों में भी दाख़िले के बाद कॉलेज यूनिवर्सिटी में सबसे दोस्ती हो जाती है। कॉलेज यूनिवर्सिटी के बाहर कॉलोनी में लोगों के बीच अपनेपन की खाई बढ़ती जा रही है। कॉलोनी के घर भी बिल्कुल फ्लैट की तरह बन रहे हैं। महानगरों में सब रिजर्व लाइफ जी रहे हैं।

बैठकों में बैठकर साझा तरीक़े से त्योहार सेलीब्रेट करना, अख़बार पढ़ना,पान बीड़ी लेना सब ख़त्म हो गया है।

जैसे हदीस में लिखा है पड़ोसी के हक़ूक़ के बारे में।

"पड़ौसियों के साथ अच्छा तालुक़ात रखो,अच्छा अख़लाक़ रखो। अच्छी चीज़ लाओ बनाओ तो उन्हें भी दो। मुसीबत में उनका साथ दो।"

अब ये सब बातें धीरे धीरे ख़त्म हो रही हैं। जैसे जैसे लोग सिमट रहे हैं अपनी चार दीवारों में...लोगों के बीच संवाद भी

महानगरों की सोशल लाइफ का यही सच है अब। लोगों के बीच औपचारिकता है, बड़ी खाई है। संवाद सिमट गये हैं। अपने ही परिवार में लोग एकदूसरे से कम बोलते हैं। भाषाओं का क्या हाल होने वाला है ऐसी स्थिति में ?

सिमट रहा है। संवाद सिमट रहा है तो भाषाएं सिमट रही हैं। वेब सीरीज़ फिल्मी शब्द लोगों की ज़बान पर हैं।

जो बात पूरी एक तहरीर लिखकर मुकम्मल की जाती थी। वो काम अब छोटी सी इमोज़ी कर देती है। फेसबुक व्हाट्सएप पर बूढ़े बच्चे सब इमोज़ी का प्रयोग कर रहे हैं बातचीत के दौरान। बच्चों को कक्षा के सिलेबस में तरह तरह की इमोज़ी के मीनिंग पढ़ाए जा रहे हैं। इमोज़ी तो धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रही है। मगर संप्रेषण कौशल पिछे छूटता जा रहा है। संप्रेषण जब पिछे छुटेगा तो ज़ाहिर है भाष का नुकसान तो होगा ही।

लोगों की बातचीत और मुलाक़ात में औपचारिकता ज़्यादा है। जो बातें पहले स्वभाविक थीं बातचीत में वो अब बैड मैनर्स का हिस्सा हैं। मसलन ;

अब किसी से यह पूछना कि फलां वस्तु कितने की है, और कहाँ से ख़रीदी है?

अब बैड मैनेर्स है।

आपकी सेलरी कितनी है ?

ये सवाल आप किसी से नहीं पूछ सकते।

फलां चीज़ कैसे बनाई मुझे भी इसका तरीक़ा बता दो ?

लोग इन बातों को बताना नहीं चाहते। अपनी रेसिपी किसी से शेयर नहीं करना चाहते। अब हर शख़्स के अपने सीक्रेट्स हैं।

महानगरों की सोशल लाइफ का यही सच है अब। लोगों के बीच औपचारिकता है, बड़ी खाई है। संवाद सिमट गये हैं। अपने ही परिवार में लोग एकदूसरे से कम बोलते हैं। भाषाओं का क्या हाल होने वाला है ऐसी स्थिति में ?

महानगर से थोड़ा दूर जब गाँव के कॉलेज से बीएड किया तो बहुत अच्छा लगा मुझे। हरयाणवी भाषा सुनने को मिलती।

मेरी क्लासमेट मुझे हँसाती रहती... एग्ज़ाम देने जाने के टाइम तो उतना हम नहीं बात करती थीं। मगर वापसी में सब टेंशन फ्री होती थी। सब बातें करतीं। एग्ज़ामीनेशन हॉल में क्या ख़ास हुआ आज के दिन। या प्रश्न पत्र पर चर्चा करती। हँसी की बात होती तो हँसती भी। एक प्रश्न के उत्तर में थियोरी के साथ बिल्ली की फिगर भी बनानी थी। मैंने वो प्रश्न विकल्प में छोड़कर दूसरा किया था। उन सबने वही किया था। वो बोल रही थीं।

"यू ड्राइंग का काम इब ना होवे"

"बिल्ली, शेर , चित्ते इब को न बनन लागरे"

"तेरी बिल्ली किसी बनी थी ?"

"पूच्छे को न क़तई भुंडी बिल्ली बनन लगरी।"

किसी भद्दी सूरत शक्ल वाले को ;

"भुंडी शक्ल",

"भुंडा मुँह"

हमारे अब्बा के सहारनपुर में भी बोलते हैं। उनकी बातों से मैं बहुत से शब्द ऐसे सुनती जो अब्बा के यहाँ भी बोले जाते हैं। मैं उन्हें बताती यह शब्द मेरे ददिहाल में बोले जाते हैं। घी भूरा उनके यहाँ भी चलता है, हमारे ददिहाल में भी। बातों बातों में एक जैसे शब्द सुनने को मिलते। नॉलेज में इज़ाफ़ा होता।

मैं जब दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ती थी...कालिंदी कॉलेज में...वहाँ भी बहुत से क्षेत्र की स्टूडेंट्स थीं। पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश की साउथ इंडियन भी। सब तरह के शब्द कानों में पड़ते। कितना अच्छा लगता था। अपने मुहल्ले में भी हम पंजाबी, हरयाणवी, भोजपुरी, राजस्थानी सब तरह की बोलियां सुनकर बड़े हुए हैं।

धीरे धीरे महानगरों से यह बोलियाँ भाषाएँ इनके शब्द गायब हो रहे हैं। अब सब या तो शुद्ध अंग्रेजी या शुद्ध किताबी हिन्दी में बात करते हैं। बच्चें बाहर दोस्तों की भाषा में प्रयोग होने वाले शब्द या एक्सेंट को इस्तेमाल करें तो उन्हें अभिभावकों से डाँट सुनने को मिलती है।बच्चों पर अभिभावकों का प्रेशर रहता है। या तो इंग्लिश बोलने का,या अपनी ही भाषा बोलने का,या शहरी हिन्दी बोलने का। क्या गुनाह हो जाएगा अगर बच्चा दोस्तों के साथ मिलकर उसकी भाषा के एक्सेंट या शब्द भी सीख ले बोल ले ? क्षेत्रवाद,जातिवाद, बिरादरीवाद, भाषागत अलगाव कहीं न कहीं सब पर हावी है।

मैं शहरी हिन्दी बोलती हूँ...मगर तरसती हूँ अपनी अम्मी की भाषा के शब्द सुनने को। अब्बा की भाषा के शब्द सुनने को। मेरे मकान में कोई उन क्षेत्रों से रहने आता है तो उनके संवाद ग़ौर से सुनती हूँ ताकि अपनी अम्मी ओर अब्बा की भाषा को अपने ज़हन में हमेशा महफ़ूज़ रख सकूं। पंजाबी गीत,और यूपी बिहार राजस्थान के लोकगीत मैंने बचपन से मोहल्ले की शादी ब्याह में सुनें। मुझे बहुत अच्छा लगता है सुनना।

चेस्टा सक्सैना जी और उनकी सिस्टर निशिता जी वर्तमान सामाजिक आर्थिक राजनैतिक स्थिति पर बुंदेली भाषा में व्यंग्यात्मक विडियो बनाती हैं "पुष्पा जिज्जी" नाम से। उनकी स्क्रिप्ट जबरदस्त होती है। हास्य व्यंग्य शैली में एकदम सटीक टीप्पणी करती हैं वो...सबसे बड़ा कमाल है भाषा का। जो बुंदेली नहीं बोल सकता वो भी उन विडियो को ख़ूब समझता है।उनकी विडियो से बुंदेली भाषा हटा दी जाए तो व्यंग्य का सारा रस समाप्त हो जाएगा। बहुत से लोग अपनी बोली भाषा में विडियो बना रहे हैं। लोग देख भी रहे हैं दूसरी भाषा के विडियो पूरे आनंद के साथ। यही भाषा जब अपना बच्चा किसी को फॉलो करके बोल देता है तो उसके मुँह पर थप्पड़ क्यों पड़ता है ? देखते हैं इतनी बारीक़ और गहरी खाईयों के बावजूद राहुल गाँधी कितने लोगों को जोड़कर भारत जोड़ो आंदोलन को सफल बना सकते हैं। सिर्फ़ सड़क पर साथ दौड़ने से भारत नहीं जुड़ सकता। भाषा, जाति,क्षेत्र,बिरादरी की दूरी भी कम करनी पड़ेंगी।

किसी की भाषा से नफरत करना उससे दूरी बनाने का मतलब है कि हम इंसानों से और इंसानियत से दूर जा रहे हैं। संवाद कम करने का मतलब है कि हम भाषा को मार रहे हैं। संवाद के बग़ैर किसी के भाव को कैसे समझ सकते हैं। इमोज़ी काफ़ी है किसी की मन- स्थिति जानने के लिए, अभिव्यक्ति के लिए ? जुड़ने के लिए ?